Thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : २७ ● ०७ जुलाई, २०१५ अ. आषाढ़ षष्ठी सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

"नेहरू बनाम पटेल, हैदराबाद बनाम कश्मीर आदि"

-विद्यावाचस्पति वेदपाल वर्मा शास्त्री

सन् १६४२ की प्रातः हम सब छात्र गुरूकुल आर्य महाविद्यालय, किरठल, मेरठ, (उ०प्र०) के अधिष्ठाता श्री सुखवीर सिंह जी 'सूप' से संस्कृत व्याकरण का पाठ पढ़ रहे थे। उस समय आकाश में ५-५, १०-१०, १५-१५ की पंक्ति में जहाज कश्मीर की ओर जा रहे थे। गुरू जी ने बताया कि - कश्मीर नरेश महाराज हरिसिंह की प्रार्थना पर गृहमंत्री सरदार पटेल ने कश्मीर से पाकिस्तानी सैनिकों को मार भगाने के लिये सेना लगा दी है। क्योंकि उन्होंने कश्मीर को भारत में विलय कर लिया है। आधा घंटा बाद जहाजों का आना जाना बन्द देख, (रेडियों की खबर से) गुरूवर ने फिर बताया कि शेख अब्दुल्ला के कहने पर पं० नेहरू ने सीज फायर (सैनिक कार्यवाही बन्द) का आदेश कर दिया है। तब तक सेना के हमले से कश्मीर का जो भाग सेना के हमले से बच रहा था, आज ६७ वर्ष बाद भी उस पर पाकिस्तान का कब्जा चला आ रहा है हम ऋषि-मुनियों के वाङ्मय के अध्येता पं० नेहरू की इस अदूरदर्शी कार्यवाही से इतने आहत हुये कि हमारी आंखें भर आई। दुःखी होने के अलावा हम छात्रों के हाथ में था ही क्या ? । इसके एक वर्ष पूर्व देश के बटवारे के समय लाहौर से दिल्ली की ओर आने वाली गाड़ियों में हिन्दुओं के बहते खून को हमने पढ़ा और देखा था।

कश्मीर में ३७० धारा के प्रयोग पर प्रखर बुद्धिमान डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपना सुझाव दिया कि कश्मीर में इस धारा के लगाने का अभिप्राय है, कश्मीर को भारत से खो देना। यह धारा भारतीयों (हमारी) की कमजोरी कहलायेगी। उन्होंने पं० नेहरू से यह भी कहा, पं० जी यह आपकी अनाधिकार तथा देश-द्रोह की चेष्टा कहलायेगी। आने वाले भारत के वीरप्रहरी इसे आपकी हठधर्मिता के नाम से पुकारेंगे। प्रधानमंत्री पं० नेहरू ने सदन के विरोध करने पर भी ३७० धारा को स्वीकृति दे दी। तभी डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भी नेहरू मंत्री मण्डल से तुरन्त इस्तीफा दे दिया।

यह विरोध का इस्तीफा ही कश्मीर में श्यामा प्रसाद मुखर्जी की मृत्यु का कारण बना। पं० जी और शेख अब्दुल्ला की घोर उपेक्षा से कश्मीर में उनकी चिकित्सा का प्रावधान नहीं बना। वे सरकारी चिकित्सालय में अकेले पड़े-पड़े बिना औषध स्वर्ग सिधार गये।

इधर १६४८ ई० में निजाम हैदराबाद के मुख्य सहायक कासिम रिजवी ने दिल्ली आकर महात्मा गांधी से कहा - ''हैदराबाद विलय के लिये अगर हिन्दुस्तान ने हैदराबाद पर हमला किया तो उसे यहां १ १/२ करोड़ हिन्दुओं की हड्डियां मिलेंगी।

तभी एक दिन पं० नेहरू ने सरदार पटेल से पूछा- यदि हैदराबाद को भारत में नहीं मिलायें तो इससे क्या फर्क पड़ता है ?

यदि आपको आनन्द भवन का चौकीदार बनने के लिये विवश किया जाय- तो उससे क्या फर्क पड़ेगा ? पटेल ने अपनी प्रतिक्रिया दी। पं० नेहरू- हैदराबाद ने अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिये संयुक्त राष्ट्र-संघ में गुहार लगाई है।

पटेल :'' जब हैदराबादी जनता ने ही उसे नकार दिया है- तो फिर वह कौन होता है? संयुक्त राष्ट्र संघ में उसे क्या मिलेगा ? ''

आर्य समाज के नेतृत्व में जनक्रान्ति हो गई है, जिसने हैदराबाद रियासत के विलय की आधार-शिला रख दी है, बस आप प्रधानमंत्री होने के नाते पुलिस कार्रवाई करने की अनुमति दे दें।''

तभी पटेल ने एक कागज उनकी ओर बढ़ा दिया - ''इस पर आपके हस्ताक्षर चाहियें।'' नेहरू ने बिना पढ़े उस पर हस्ताक्षर कर दिये। इस पत्र को स्वयं पटेल ने टाइप किया था, क्योंकि वे जानते थे कि नेहरू जी आसानी से हैदराबाद पर पुलिस कार्रवाई करने की अनुमति नहीं देंगे। (इण्डियन समर, पेज-२२३) निजाम के गुर्गे हैदराबाद को स्वतंत्र देश बनाने के लिये विश्वस्तर पर एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे थे। पटेल के निजी सचिव बी.पी. मेनन ने उनकी प्रतिक्रिया बताते हुए लिखा है कि :-

"If the union Souernment takes any army action against Hydrabad, 100,000 men are ready to join our army. We also have 100,000 bombers in south arabia ready to bomb Bombay" अर्थात्, ''यदि भारत हैदराबाद पर हमला करता है तो हमारे २ लाख युवा आर्मी में प्रवेश को तैयार हैं तथा १ लाख दक्षिणी अरब के बम वर्षक युवा बम्बई को बर्मों से ध्वस्त कर देंगे।

सच्चाई बहुत बड़ा कारगर हथियार है- यह किसी के छुपाये नहीं छुप सकती। सरदार पटेल से थोड़ा विरोधाभास होते भी महात्मा गांधी कहते हैं कि '' पटेल ने ५६२ रियासतों को अपनी युक्ति एवं दूरदृष्टि-कोण से भारत में मिला लिया है। इसमें सन्देह का कोई स्थान नहीं है कि पटेल जैसे नेता के संकल्प एवं साहस के बिना विभिन्न राज्यों का एकीकरण इतनी सरलता से नहीं हो पाता।

आगे गांधी ने और भी कहा था - कि ''यह समस्या इतनी पेंचीदी है कि पटेल के अलावा इसे कोई दूसरा सुलझा नहीं सकता था।''

बड़े निजाम की ३ हजार बेमर्में भी, जिनमें २५०० हजार हिन्दू युवतियां थीं जिनका अपहरण करने के बाद उनसे निकाह पढ़ाया गया था।

कासिम रिजवी जो गांधी जी से दिल्ली में मिला था (निजाम को भांति बेहद ऐय्याश था वह भी) जो के शब्दों में ''इस्लाम कहता है - हमारे युवकों को शादी के लिये हिन्दू लड़कियों को ही प्रेरित करना चाहिये, क्योंकि एक हिन्दू लड़की को मुस्लिम बनाने से ६ बार हज करने जितना शबाब मिलता है।'' (घर वापसी) से उद्धृत - लेखिका ताज फरहान।

भारत देश की हिन्दी राष्ट्र-भाषा का न बनना, पं० नेहरू की ही घोर अराष्ट्रीय अदूरदर्शित है। आचार्य सन्त विनोबा भावे- राजर्षि पुरुषोत्तम दास दण्डम-महात्मा गांधी - लाला लाजपत राय - गोविन्द बल्लभ पन्त, मोरारजी देसाई, जय प्रकाश नारायण - कर्पूरी ठाकुर - मोहन लाल

शेष पेज ७ पर देखें....

वेदामृतम्

श्रप त्यं परिपन्थिनं, मुषीवाणं हुरश्चितम्।
दूरमधि स्नुतेरज।। ऋग् १.४२.३

(हे पूषन्! हे परमात्मन्!) (त्यं) उस (परिपन्थिनं) मार्ग के बाधक शत्रु को (मुषीवाणं) चोर को (और) (हुरश्चितम्) कुटिलता का संग्रह करने वाले को (स्नुतेः अधि) मार्ग से (दूरं) दूर (अज) फॅक दो।

धर्म-यात्रा में हमें केवल इन बाह्य शत्रुओं का ही भय नहीं है, अपितु हमारे अन्दर भी शत्रु घर किये बैठे हैं। हमारे अन्दर प्रच्छन्न रूप से बैठे हुए अपने ही धर्म-विरोधी भाव धार्मिक भावों को दबा देना या चुरा लेना चाहते है और उनके स्थान पर हमारे अन्तःकरण को कुटिलताओं का संग्रहालय बना देने का षड़यन्त्र करते हैं। उन विरोधी भावों से भी हमें सचेत रहना होगा।

हे पूषन्! हे हमारे आत्मा को पोषण देने वाले परमात्मन्! तुम हमारे धर्म-मार्ग में बाधा डालने वाले बाह्य और आन्तरिक समग्र शत्रुओं को दूर फेंक दो तथा हमें निरन्तर अपनी धर्म-यात्रा प्रवृत रखने के लिए परिपुष्टि प्रदान करते रहो।

डा० रामनाथ वेदालंकार

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

Thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

धूम्रपान पीने व न पीने वाले सभी के लिए प्राणघातक इसके लिए प्रचण्ड जन चेतना की आवश्यकता

सरकार के द्वारा ३१ मई १५ को सर्वत्र धूम्रपान विरोधी दिवस घोषित किया गया। जगह जगह रेलियां निकालकर उसके विरुद्ध आवाज उठायी गयी। यह कदम प्रशंसनीय है परंतु यह विचारणीय है कि वर्ष में १ दिन विरोध दिवस मना लेने से क्या धूम्रपान बन्द हो जायेगा। सिगरेट की डिब्बी पर धूम्रपान जानलेवा लिखा रहता है परंतु क्या कोई उसे पढ़ता और मानता है नहीं मानता। अतः १ दिन विरोध दिवस मनाने से धूम्रपान बन्द नहीं होगा। अतः सरकार द्वारा ऐसे सभी उत्पादों पर जन जागृति के साथ साथ उसके विक्रय पर प्रतिबंध लगाने की नितान्त आवश्यकता है। नशा तो नशा होता है उसकी तलब स्वास्थ्य अस्वास्थ्य पर विचार नहीं करने देती। नशे का सेवन एक रोग है। रोग का निदान औषधि से ज्यादा संकल्प शक्ति से होता है।

सरकार द्वारा स्थापित धूम्रपान निषेध विभाग के द्वारा उसके सेवन की हानियों के परिणाम के लिए पत्रकों का सतत जन जन में पहुँचाने का निश्चय करना होगा। सभी सामाजिक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को स्वयं उसके सेवन का सर्वथा परित्याग करने का निश्चय करना होगा।

धूम्रपान पीने वाले के साथ ही न पीने वाले सम्पूर्ण वायु मण्डल को दूषित करना है। आस पास चलने वालों के जो (धूम्रपान नहीं करते) उनके भी फेफड़ों में जहर भरता व उन्हें रोगग्रस्त करता है। अतः इसके विरूद्ध स्वास्थ्य कर्मी संस्थाओं को विशेष रूप से विज्ञप्तियों द्वारा एवं दूरदर्शन के विविध चैनलों द्वारा उसके दोषों से जन जन को बचाने के लिए उनके गुण दोषों का पूरी तरह से प्रचार करना चाहिए। सभी सामाजिक संस्थाओं को अपने कार्यक्रमों में सबके हित में उनका अवश्यमेव प्रसारण करना चाहिए।

-सम्पादक

आर्य समाज डालीगंज (लखनऊ विश्व विद्यालय के पीछे) का शताब्दी समारोह

दिनांक- १८, १६, २० सितम्बर २०१५

स्थान- छत्रपति शिवाजी सभागार, रामाधीन सिंह कालेज निकट आई.टी. चौराहा, लखनऊ

आर्य समाज डालीगंज लखनऊ का शताब्दी समारोह दिनांक १८, १६ व २० सितम्बर २०१५ को छत्रपति शिवाजी सभागार, रामाधीन सिंह कालेज, बाबूगंज में आयोजित है।

देश के प्रसिद्ध आर्य सन्यासी, विद्वान, विदुषियां, भजनोपदेशक आर्य नेता तथा राजनेता पधार रहे हैं। सभा प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा एवं सभामंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय है।

प्रेम शंकर शुक्ल, प्रधान आनन्द चौधरी, मंत्री

अरविन्दनाथ पाण्डेय, कोषाध्यक्ष

रमेश चन्द्र त्रिपाठी, प्रधान - आर्य उपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ

प्रबोध सागर जौहरी, मंत्री - ,,

,,

विरोधाभासी किन्तु अविरोधी

प्रताप कुमार 'साधक'

दो शब्द जो परस्पर विरोधी अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें विलोम या विपरीतार्थी कहते हैं। जैसे - हिंसा और दया, जन्म और मृत्यु, सुन्दर और कुरूप आदि। किन्तु कुछ शब्द - युग्म ऐसे भी हैं, जो विरोधी होने का आभास देते हुए भी विरोधी नहीं होते, जैसे - दया और न्याय, तर्क और विश्वास, सत्य और प्रिय, स्वाभिमान और विनम्रता। इस लेख में उपरोक्त शब्द - युग्मों पर ही विचार करेंगे।

दया और न्याय :- दया का अर्थ है स्वयं दुःख न देना और दुःखी के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करना, उसे यथासम्भव सहायता देना। दया का अन्तिम उद्देश्य होता है - दुःखी का दुःख दूर कर देना। न्याय का अर्थ है - कर्त्ता द्वारा किए गए अच्छे या बुरे कर्मों के आधार पर पक्षपात - रहित होकर सर्वोचित फल प्रदान करना। न्यायकर्त्ता चाहे माता पिता हों, गुरू हों, न्यायाधीश हो अथवा ईश्वर - सभी के लिए यही परिभाषा होगी। इस सम्बन्ध में बहुधा सम्प्रदाय वादियों को यह भ्रम रहता है कि ईश्वर दयालु है अतः वह दुष्कर्म करने वाले मनुष्यों को भी दुःखदायी दण्ड नहीं देता, उन्हें क्षमा कर देता है। अपराधी भी आरोप सिद्ध हो जाने पर न्यायाधीश से दण्ड न देकर क्षमाकर देने की प्रार्थना करता है। विचारणीय है कि क्या न्यायकर्त्ता द्वारा अपराधी को क्षमा कर देना अपराधी के लिए भी लाभकारी सिद्ध होगा। क्या ऐसा करने से उसमें अपराध करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा नहीं मिलेगा? फिर क्या वह एक दिन बड़ा अपराधी बनकर अधिक लोगों को दुःख देने तथा स्वयं भी बड़ा दण्ड प्राप्त करने का अधिकारी नहीं बनेगा ? विचार कीजिए - यदि समाज में अपराधी को दण्ड देने की व्यवस्था समाप्त हो जाए तो कैसे विश्रृंखलता उत्पन्न हो जाएगी ? फिर तो 'Survival of the fitest' के सिद्धान्तानुसार जंगल-राज स्थापित हो जाएगा। जब न्याय - रहित क्षमा परिवार और समाज के लिए अहितकर है, तो परम न्यायकारी परमेश्वर उसे स्वीकृति क्योंकर दे सकता है। वस्तुतः यथोचित दण्ड देना मानव-सुधार के लिए ही होता है और उसी के परिणाम स्वरूप व्यक्ति दुष्कर्म त्याग कर दुःखों से मुक्ति पा सकता है यही सच्ची दया है।

तर्क और विश्वास - प्रायः लोग विश्वास को धर्म का आधार मानते हैं और तर्क को उसका विरोधी समझते हैं। कहावत भी बन गई है- 'मानो तो भगवान नहीं तो पत्थर है।' विचार कीजिए - क्या केवल मान लेने से ही कोई वस्तु अपने अनुकूल बन सकती है? क्या रेत को चीनी मानकर खाने से वह मीठी हो जाएगी ? बैल को गाय मान लेने से वह दूध देने लगेगा ? अग्नि को शीतल मान लेने से वह हाथ नहीं जलाएगी ? क्या ऐसी घटनाएँ नहीं होती जब कोई चोर साधु-वेश में किसी गृहणी को स्वर्ण-आभूषण दोगुना करने का वचन देता है और महिला उस पर विश्वास करके लुट जाती है। क्या बिना तर्क की कसौटी पर किसी बात की जांच किए उस पर विश्वास कर लेना उचित है? क्या अधिविश्वास को भी विश्वास मानना टीक है ? निश्चय ही मनुष्य को ईश्वर - प्रदत्त बुद्धि का प्रयोग सत्यासत्य का अन्वेषण करने हेतु अवश्य करना चाहिये। तर्क की कसौटी पर सत्य हो जाने पर ही किसी बात पर विश्वास करना उचित है, किन्तु बिना परखे किसी पढ़ी या सुनी बात को सत्य मान लेता अन्धविश्वास ही होता है, जो अनिष्टकारी हो सकता है।

ऋषि गौतम ने तर्क की अनिवार्यता मानते हुए एक शास्त्र- 'न्याय दर्शन' की रचना की है। उसके आधार पर धार्मिक विषयों को भी तर्क की कसौटी पर कक्षा जा सकता है। तार्किक - निष्कर्ष को स्वीकार कर लेता ही विश्वास कहलाता है।

सत्य और प्रिय - सत्य एक सर्वमान्य सद्गुण है। मनु महाराज ने धर्म के १० लक्षणों में सत्य को भी सम्मिलित किया है। पंतजालि ऋषि ने योग के प्रथम अंग 'यम' में सत्य को भी स्थान दिया है। उपनिषदों में तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों में सत्य कथन और सत्य आचरण अपनाने को महत्व दिया गया है। दीक्षान्त समारोह में गुरू जो निर्देश स्नातकों को देते थे, उनमें सर्वप्रथम वाक्य होता था - 'सत्यवद', अर्थात् सत्य ही बोलो। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के १० नियमों में प्रथम पांच में सत्य की प्रतिष्ठा सम्मिलित की है। समस्त धार्मिक जगत के साथ-साथ नास्तिक जगत भी सत्य की उच्चता को स्वीकार करता है। असत्य-भाषी पर कोई विश्वास नहीं करता। सत्य को ही शिव (कल्याणकारी) और शिव को ही सुन्दर (ग्रहणीय) स्वीकारते हुए 'सत्यं शिवं सुन्दरं का घोष किया गया है।

किन्तु सत्य सदैव प्रिय नहीं होता। इसीलिए महाभारत के विद्वान विदुर ने राजा धृतराष्ट्र से कहा था कि सत्य का कहने वाला और सुनने वाला दुर्लभ होता है। वस्तुतः लोग अपनी झूठी प्रशंसा सुनकर तो प्रसन्न हो जाते हैं, किन्तु सच्ची आलोचना सुनना नहीं चाहते। वैसे भी प्रिय वचन बोलने का निर्देश ही दिया जाता है। अप्रिय शब्द किसी को भी रूचिकर नहीं लगते, अपितु उनसे मन दुःखी हो जाता है, जो एक प्रकार की हिंसा ही है। अतः सत्य वचन से हिंसा करना धर्म और नीति के अनुसार अनुचित ही है, क्योंकि सत्य और अहिंसा दोनों ही समान रूप से दैवीय गुण हैं।

फिर क्या सत्य और प्रिय को विरोधी मान लिया जाए ? कदापि नहीं। कहा गया है - ''सत्य ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यम प्रियम्। प्रियज्चनानृतं ब्रूयादेषधर्मः सनातनः।'' अर्थात् सत्य बोलो किन्तु प्रिय बोलो अप्रिय लगने वाला सत्य मत बोलो। सत्य को प्रिय बनाकर बोलो - यही प्राचीन काल से चला आ रहा धर्म है। किसी नेत्रविहीन को 'अंधा' कहने के स्थान पर 'प्रज्ञाचक्षु' भी कहा जा सकता है। 'तुम बहुत बदतमीज़ हो' के बजाय ऐसी सलाह भी दी जा सकती है कि 'सभ्यतापूर्ण व्यवहार सभी को अच्छा लगता है।' वस्तुतः हमारा सत्य-कथन सुनने वाले के कल्याण के लिए होना चाहिये, और वह तब ही होगा जब सुनने वाला उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करे। हाँ इसके लिए थोड़े संयम और अभ्यास की आवश्यकता होगी। इसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि प्रियता के लिए किसी के सम्मुख उसकी झूठी प्रशंसा की जाए अथवा उसकी असत्य बात का समर्थन किया जाए, किन्तु प्रशंसा योग्य गुण का कथन और सत्य के पक्ष में अपनी बात मधुरता के साथ रखना किसी को अप्रिय नहीं लगेगा। ऐसा मधुरभाषी जब कोई कड़ुवा सत्य भी कहता है तो सुनने वाला क्रोधित नहीं होता। अतः दूसरों के कल्याणार्थ सत्य कहने वाला प्रियभाषी ही माना जाएगा, क्योंकि वह द्वेषभाव से दूर होगा।

स्वाभिमान और विनम्रता - शेष पेज ७ पर देखें....

Thearyasamaj.org

"सून बीच दस कंधर देखा। आवा निकट जती के वेषा"

जाके डर सुर असुर डेराहीं। निसि न नीद दिन अन्न व खाहीं।।

सो दस सीस श्वान की नाई। इत उत चितइ चला भड़िहाई।।

इमि कुपंथ पगदेत खगेसा। रह न तेज तन बुधि बल लेसा।।"

रामचरित मानस के अरण्य काण्ड की यह चौपाइयाँ उस समय की है, जब श्री राम अपनी अर्द्धांगिनी सीता के आग्रह पर स्वर्णमृग को पकड़ने जाते है। षड्यन्त्र के वशीभूत अनुज लक्ष्मण भाभी माता की वेदनां के निवारण हेतु अग्रज राम की सहायतार्थ प्रस्थान कर जाते हैं। साध्वी सीता जी को अकेला देखकर राक्षस रावण साधुवेश में उनके हरण के लिए आगे बढ़ता है। रावण सूना अवसर देखकर यती के वेश में सीता जी के समीप गया। जिसके डर से देवता-दैत्य तक इतना डरते हैं कि उन्हें रात्रि में नींद नहीं आती और दिन में भरपेट भोजन नहीं खा पाते। वही रावण कुत्ते की तरह इधर-उधर ताकता हुआ भड़िहाई (चोरी) के लिए चला। इस प्रकार कुमार्ग पर पैर रखते ही शरीर में तेज, बुद्धि एवं बल का लेश भी नहीं रहता। आज भी जो भयंकर से अति भयंकर अत्याचार एवं नरसंहार आतंकवादी करते हैं, वे चाहे कितने ही अस्त्र-शस्त्र सज्जित बलशाली क्यों न हों, वे अपने लक्ष्य स्थलों पर प्रवेश श्वान की मनोवृत्ति के अनुसार ही करते हैं, और निरीह निःशस्त्र असावधान भोले-भाले भले लोगों को मारकर शेर की भांति दहाड़ते हुए राक्षसी रूप का परिचय देते हैं। प्रस्तुत वेद यन्त्र से इस श्वान वृत्ति का पता चलता है :-

अतिदव सारमेयौ श्वानौचतुरक्षौशबलौ साधुना पथ।

अथा पितृन्त्सुविदत्राँ उपहि यमेन ये सधमाद मदन्ति।। (ऋग्वेद १०.१४.१०)

तात्पर्य है कि चंचल तेज गति वाली सरमा कूकरी से उत्पन्न चौअक्खे (चौकन्ने की भाँति चार दिशाओं की ओर दृष्टि रखने वाले) चित कबरे तेज दौड़ने वाले कुत्तों के ठिकाने को शीघ्रता से लाँघकर सुखकारी सज्जनों के मार्ग पर आ जाओ। ज्ञान-विज्ञान में दक्ष अपने पितर जनों के सान्निध्य में रहकर संयम एवं न्यायशील आचरण से हरक्षण मोद मनाओ।

श्वान - वृत्ति और निवृत्ति

देवनारायण भारद्वाज

गहन विस्तार से मंत्र प्रकरण एक पुस्तक के आकार में भी अपूर्ण रह सकता है, किन्तु इसका सार संकेत इस लेख के कुछ पृष्ठों में भी अपना प्रयोजन सिद्ध कर सकता है। श्वानौ (कुत्तों) से तात्पर्य है निरन्तर चलते-दौड़ते रहने वाले-दो-शवलौ (चितकबरे) रात व दिन के समान काले एवं सफेद, केवल रंग ही नहीं नकारात्मक एवं सकारात्मक मनोवृत्ति वाले मनुष्य से भी है, एक बुरा ही बुरा सोचता है, जबकि दूसरा भला ही भला सोचता है। जिसका जैसा स्रोत होता है उसका वैसा ही विस्तार होता है। समुद्र का अपार भण्डार किन्तु नमक ही नमक, एक बूँद भी पान नहीं किया जा सकता, मेघ की एक ही बूँद तृप्ति प्रदान कर देती है यहां तक कि स्वाँति नक्षत्र में यदि वह केले में पड़ती है, कपूर बनती है, बाँस में पड़ती है वंशलोचन बन जाती है, सीप में पड़ती है तो मोती बन जाती है। भले ही यह कवि की कल्पना हो, किन्तु संकल्पना की ओर प्रेरित तो करती है। समुद्र की तो बात छोड़िये, जब मैं मथुरा में कार्यरत था, तो नगर के पानी में दाल नही गलती थी चाय भी नहीं बनती थी, इन उपयोगों के लिये शुद्धजल १४ कि.मी. दूर मण्डलीय शोध केन्द्र से नित्य मँगाना पड़ता था।

उपरोक्त श्याम-श्वेत श्वानों को जन्म देने वाली यदि सरमा कूकरी है तो उससे जन्म लेने वाला श्वान कुकर्मी ही होगा और यदि जन्म देने वाली गतिशील सूर्यप्रभा है, तो वह सुकर्मी ही होगा। यह दोनों प्रकार से गति करने वाले श्वान या दौड़ने वाले व्यक्ति चौकन्ने ही नही चौअक्खे भी होते है अर्थात् इनकी सतर्क निगाहें चारों ओर ही क्या सब ओर होती है। एक की आंखों पर कुदृष्टि का चश्मा लगा होता है और दूसरे की आँखों पर सुदृष्टि का चश्मा लगा होता है। चलिये इनका नामकरण भी कर लेते हैं - कल्लू एवं सज्जू। इन दोनों के (चतुरक्षौ) चारों दिशाओं में दूर दूर व्याप्त दृष्टियों की चर्चा करते हैं। नकारात्मक सोच वाले कल्लू के चार दृष्टि लक्ष्य यो समझिये :-

१. स्वजाति द्रोही - अपनी टोली में नये आये श्वान को दूसरे कुत्ते कभी सहन नहीं करते हैं, उसे भगाकर ही दम लेते हैं।

२. विष-सन्दोही - कुत्तों की लार में भयंकर विष होता है। रहीम ने ठीक ही लिखा है- "रहिमन ओछे नरन से वैर भलो न प्रीति। काटे-चाटे श्वान के दोओ भाँति अनीति।"

३. रूधिर रोही - अपने से कमजोर जानवर को मारकर खा जाने में जरा भी दया नहीं दिखाते हैं, यहां तक कि किसी सूखी पड़ी अस्थि को चूसना आरम्भ कर देते हैं, उसमें कुछ रस नहीं होता है, अपने मुख से निकले खून के स्वाद में सुख मानते हैं।

४. वमनपोही - स्वयं के उल्टी किये अपशिष्ट को खाने में घृणा नहीं करते। अपनी बात से पलट जाने वाले मनुष्य भी इसी कोटि में आते हैं।

कलुषित प्रवृति का कल्लू किसी सुनसान महल में प्रवेश करता है। उसकी दीवारों में दर्पण लगे हैं। कल्लू एक से अनेक हो जाता है। वह अकेला भौंकता है तो सारे प्रतिबिम्ब उसकी ओर भौंकते हैं वह उन कुत्तों के इतने बड़े आक्रमण को सह नहीं पाता और मूर्छित हो जाता है। सूर्यप्रभा अर्थात् सौमनस्य पूर्ण स्वभाव वाले स्रोत या कोख से जन्मा श्वान सज्जू भी उस महल में घुसता है। वहां दर्पण-विम्बों के द्वारा अनेक अपने जैसे श्वान दिखाई देते हैं। वह द्रोहवश भौंकता नहीं, प्रसन्न होता है। आराम से सो जाता है, दूसरे भी उसके साथ सो जाते हैं। दुष्प्रवृतियों की निवृत्ति से कोई भी श्वान सज्जू बन जाता है, तब उसके चार विशिष्टगुण उपयोगी बन जाते हैं :-

१. स्वामिभक्ति - जो कुत्ते को पालतू बना लेता और प्रेम व्यवहार करता है, उसके संकेत मात्र से उनका श्वान सक्रिय हो जाता है। नवीनतम समाचार है कि बीजिंग (चीन) में कुत्ते ने तेज रफ्तार से आ रही स्कूल बस के आगे कूदकर अपनी दृष्टि बाधित मालकिन को बचाया, इस मध्य उसके पैर जख्मी हो गये। (दैनिक हिन्दुस्तान ११-०६-२०१५)

२. सजगवृत्ति - हिन्दी कवि एवं शास्त्रकारों ने सजगता की दृष्टि से श्वान-निद्रा का महत्व बताया है जो भी अपने यहां कुत्ते को पालता है, उसे संकेत घण्टी की आवश्यकता नहीं होती, कुत्ता ही भौंक कर सन्देश मालिक तक पहुँचा देता है। नगर गली में किसी अपरिचित विद्रूपवेशी व्यक्ति के प्रवेश करते ही, एक कुत्ते के साथ सभी कुत्ते इस प्रकार भौंकते हैं कि पथिक की सिट्टी-पिट्टी ही गुम हो जाती है। परिचित के समझाने पर ही कुत्ते शान्त होते हैं। अब तो द्वार पर स्वागत नहीं कुत्ते से सावधान निःसंकोच लोग लिख देते है।

३. अभिव्यक्ति - भाव कुत्तों के अन्दर भी उठते हैं, भौंकने की तरंग दीर्घा से नियोजित करते हैं, भाषा के अभाववश शब्दों में नहीं बदल पाते हैं। पालतू कुत्ते अपना प्रेम व्यक्त करने में पीछे नहीं रहते। आपके प्यार के लिए वे आपकी घन्टों प्रतीक्षा करते हैं। प्राणि जगत में सबसे विकसित व बुद्धिमान होने पर भी मनुष्य थोड़े से बदलाव से विचलित हो जाता है। वह होता कुछ है और दूसरे के समक्ष कुछ और प्रदर्शित करता है। पालतू कुत्ता कठिन समय में भी अपने निर्धारित मूल स्वभाव को नहीं छोड़ता। आपको जैसा वे देखते है वैसा अनुकरण करते हैं। पूजा-पाठ-आरती आदि के निर्धारित समय पर भक्तिभाव के साथ वे रहना पसन्द करते हैं। शाकाहारी परिवारों में कुत्ते भी वैसे ही हो जाते हैं।

४. घ्राणशक्ति - अनुसन्धानकर्ताओं ने पता लगाया है कि मनुष्य की तुलना में कुत्ते की सूंघने की शक्ति एक लाख से एक करोड़ गुना अधिक होती है। (दै० हिन्दुस्तान २५.०५.२०१५) कुत्ते अपने खाने-पीने-बैठने व अन्य व्यवहार कार्यो को इस घ्राण शक्ति के अनुसार ही निर्धारित करते हैं। शासन के नागरिक व सैनिक सुरक्षा गतिविधियों में कुत्तों की घ्राण शक्ति का लाभ, इन पर बड़ी राशि व्यय करके लिया जाता है।

उपसंहार करते हुए व्यक्त करना है कि उपरोक्त 'कल्लू' कोटि के मनुष्य वे हैं जिनके पास दृष्टि ही दृष्टि है, केवल स्वार्थ की दृष्टि जो संसार के लिए नकारात्मक ठहरती है। सज्जू कोटि के मनुष्य वे है, जिनके पास केवल दृष्टि ही नहीं दृष्टिकोण भी है- परमार्थ का दृष्टिकोण जो संसार के लिए सकारात्मक ठहरता है। ऋषियों ने इसी उपकारी देन को मान कर बलिवैश्वदेव यज्ञ में अन्यों के साथ-साथ श्वान के लिए भी भाग निर्धारित किया है।

परेण्यम, अनन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़

प्रवेश सूचना

सुरम्य वातावरण में योग्यतम अध्यापकों द्वारा अध्यापन एवं छात्रावास की उत्तम व्यवस्था से युक्त "आर्य गुरूकुल महाविद्यालय सिरसागंज-फिरोजाबाद में प्रवेशिका से आचार्य पर्यन्त कक्षाओं में योग्यता परीक्षा के आधार पर प्रवेश प्रारम्भ हैं। छात्र की आयु न्यूनतम १० वर्ष होनी चाहिए। पाठ्यक्रम में राज्य सरकार द्वारा निर्धारित समस्त विषय सम्मिलित है।

सम्पर्क सूत्र
६४१२२६६६६०, ६४११४३६७४१ प्राचार्य

hearyasamaj.org

शुभ अथवा अशुभ मुहूर्त नहीं, कार्य होते हैं शुभ अथवा अशुभ

-सीताराम गुप्ता

इस संसार को चलाने के लिए सामूहिक रूप से तथा व्यक्ति के विकास के लिए व्यक्तिगत रूप से कर्म करना अनिवार्य है। कर्म के अभाव में जीवन की कल्पना भी असंभव है अतः हर व्यक्ति कर्म करता है और कर्म के उपरांत सफलता चाहता है। हम कार्य करेंगे तो परिणाम तो आएगा ही, सफलता तो मिलेगी ही लेकिन किस हद तक मिलेगी ये कहना ज़रा मुश्किल होता है। क्या वह सफलता ही होगी इसका निर्णय करना तो और भी कठिन है। गीता में निष्काम कर्म को महत्त्व दिया गया है। कर्म करो लेकिन फल की इच्छा मत करो। निष्काम कर्म का अर्थ ही है कि कार्य में सफलता आशातीत व असंदिग्ध होती है लेकिन हम में से अधिकांश लोग कार्य करने से पहले एक उद्देश्य निश्चित कर लेते हैं और उसमें सफल होने के लिए कोई कसर नहीं रख छोड़ते। अधिकांश लोग कार्य में सफलता सुनिश्चित करने के लिये ये भी सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि कार्य को सही अथवा शुभ मुहूर्त में ही किया जाए क्योंकि उनके अनुसार शुभ मुहूर्त में किए गए कार्यों में ही अपेक्षित पूर्ण सफलता संभव है अन्यथा नहीं।

प्रॉपर्टी खरीदनी हो, मकान बनवाना प्रारंभ करना हो, गृह प्रवेश करना हो अथवा विवाहादि अन्य कोई भी मांगलिक कार्य हो लोग प्रायः शुभ मुहूर्त में ही ये कार्य सम्पन्न करते हैं। किसी भी कार्य को करने के लिए शुभ मुहूर्त, शुभ घड़ी, शुभ दिन अथवा शुभ महीना कौन सा होगा इसका पूरा शास्त्र हम लोगों ने रच डाला है लेकिन देखने में ये भी आता है कि एक समय विशेष पर शुभ मुहूर्त में जहां अनेकानेक मांगलिक कार्य सम्पन्न हो रहे होते हैं वहीं उन्हीं क्षणों में दूसरी ओर रोग-शोक, मृत्यु, दुर्घटनाएँ, उत्पीड़न, शोषण आदि के असंख्य दृश्य भी सर्वत्र दिखलाई पड़ते हैं। किसी का जन्म हो रहा है तो कोई काल के गाल में समा रहा है। कहीं मंगल ध्वनि सुनाई पड़ रही है तो कहीं हृदयविदारक रुदन कानों के पर्दों से टकरा रहा है। कहीं परीक्षा परिणाम घोषित हो रहा है जिसमें कोई पास तो कोई फेल हो रहा है। ऐसी स्थिति में हम प्रायः कह देते हैं कि ये अपने-अपने कर्मों का फल है। जैसा कर्म वैसा परिणाम। ठीक है। जैसा कर्म वैसा परिणाम लेकिन यदि हर व्यक्ति को अपने कर्मों का फल भोगना ही है, कर्म के अनुसार परिणाम मिलना ही है तो फिर महत्त्व कर्म का हुआ या मुहूर्त का?

शुभ मुहूर्त वास्तव में है क्या? शुभ मुहूर्त वास्तव में कार्य को प्रारंभ करने का उचित समय है। यह समय प्रबंधन का ही एक स्वरूप है ताकि कार्य समय पर सम्पन्न हो सके और निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हो सके। हमारे संसाधन और प्रयास निरर्थक न हो जाएँ। एक समय था जब हमारे पास उतने साधन नहीं थे जितने आज हैं। पहले सड़कें नहीं थीं, यातायात के साधन नहीं थे। अतः लोग पैदल ही आते जाते थे। बरसात के दिनों में तो पैदल आना-जाना भी दुष्कर हो जाता था। ऐसे में बरसात के दिनों में किसी भी कार्य को करने का निषेध था ताकि मौसम संबंधी परेशानियों व अव्यवस्था से बचा जा सके। पहले बिजली नहीं थी अतः दिन की रोशनी में ही सारे कार्य करने होते थे। कहीं जाना होता तो सुबह जल्दी उठकर चल पड़ते थे ताकि पहुँचने और वापस आने में रात न हो जाए। आज भी दोपहर से पूर्व या सूर्यास्त से पहले का समय शुभ माना जाता है और इसके मूल में है सामान्य बुद्धि और व्यावहारिकता। ठीक है आप सभी महत्त्वपूर्ण कार्य शुभ मुहूर्त देख कर ही करते हैं और आपका विश्वास है कि इससे आपको सफलता भी मिलती है। मान लेते हैं लेकिन यह भी वास्तविकता है कि उस क्षण या शुभ मुहूर्त के साथ-साथ सफलता का श्रेय उस क्षण या शुभ मुहूर्त के पति आपके विश्वास को भी जाता है।

अब जीवन के दूसरे महत्त्वपूर्ण पक्ष को भी देखिए। आपका किसी महत्त्वपूर्ण या मनचाहे कोर्स में प्रवेश हो जाता है अथवा नौकरी मिल जाती है तो आपको एक निर्दिष्ट समय पर ही जाना पड़ता है अन्यथा आपका प्रवेश या नौकरी रद्द कर दी जाती है। क्या ऐसी स्थितियों में भी आप शुभ मुहूर्त के चक्कर में पड़ेंगे? शायद नहीं। बिल्कुल भी नहीं। हम जानते हैं कि यदि ये अवसर हाथ से निकल गया तो दोबारा नहीं मिलने वाला। हम तत्क्षण अपेक्षित दिशा में आगे बढ़ने का निर्णय लेते हैं। प्रायः यही पढ़ाई अथवा नौकरी हमारे जीवन में सुख-समृद्धि लाती है तथा हमारे जीवन को अर्थ व गुणवत्ता प्रदान करने में सहायक व सक्षम होती है। यहाँ अवसर महत्त्वपूर्ण हो जाता है न कि कोई मुहूर्त विशेष।

वास्तव में उपयोगी अवसर की प्राप्ति या महत्त्वपूर्ण कार्य के प्रारंभ के कारण ही कोई समय विशेष या दिन विशेष हमारे लिए यादगार बन जाता है, शुभ हो जाता है शुभ मुहूर्त के कारण नहीं। यही कारण है कि हम अपना जन्म दिन, किसी महत्त्वपूर्ण पाठ्यक्रम में प्रवेश का दिन, नौकरी शुरू करने का दिन व विवाहादि का दिन कभी नहीं भूलते। उनकी वर्षगाँठ मनाकर उसे हमेशा याद रखने का प्रयास करते हैं। किसी भी वर्षगाँठ या जन्मदिन को मनाने के लिए तो कभी भी शुभ मुहूर्त नहीं देखा जाता। जब हम इस संसार में आते हैं तो क्या शुभ मुहूर्त देखकर आते हैं? जब कोई व्यक्ति बीमार होता है या कोई आसन्नप्रसवा प्रसव पीड़ा के कारण छटपटा रही होती है तो क्या शुभ मुहूर्त देखकर ही उन्हें अस्पताल या लेबर रूम में ले जाया जाता है? नहीं न। तो फिर अन्य कार्यों के लिए शुभ मुहूर्त रूपी इस निरर्थक नाटकबाज़ी की क्या ज़रूरत है?

यदि हम ध्यानपूर्वक देखें या चिंतन करें तो ज्ञात होता है कि मुहूर्त शुभ या अशुभ नहीं होता शुभ या अशुभ होता है कार्य। जिसका परिणाम शुभ वही कार्य शुभ और जिसका परिणाम भयंकर होने की प्रबल संभावना हो वही अशुभ है। अगर आप पेड़ लगा रहे हैं तो निश्चित रूप से यह शुभ कार्य ही हुआ और अगर जंगलों का सफाया कर रहे हैं तो इस कार्य में आपको कितना ही आर्थिक लाभ क्यों न हो रहा हो ये कार्य अशुभ कार्यों की श्रेणी में ही आएगा। पेड़ कभी भी लगाइए वह शुभ समय या मुहूर्त ही होगा क्योंकि उसका परिणाम हर दृष्टि से अच्छा ही होगा। हाँ पेड़ लगाते समय मौसम व परिवेश का ध्यान रखना ज़रूरी है। यदि झुलसती गर्मी में दोपहर के समय कोई नाजुक सा पौधा रोपेंगे और पानी व छाया की समुचित व्यवस्था भी नहीं करेंगे तो पौधे के नष्ट होने की पूरी-पूरी संभावना है लेकिन इस स्थिति में पौधे के नष्ट होने का कारण मुहूर्त की उपयुक्तता या अनुपयुक्तता नहीं अपितु सामान्य बुद्धि व व्यावहारिक ज्ञान की कमी या संबंधित विषय में अज्ञानता ही है।

संस्कृत में एक सूक्ति है कि शुभस्य शीघ्रम्, अशुभस्य कालहरणम् अर्थात् शुभ कार्य को जितना जल्दी हो सके कर डालें लेकिन अशुभ कार्य को निरंतर टालते रहें। शुभस्य शीघ्रम् अर्थात् शुभ अथवा पुण्य कार्य को शीघ्र करें। आज ही नहीं अभी करें। यदि हम तत्क्षण किसी की मदद करने के लिए आगे आ जाते हैं तो उसकी मदद हो जाती है और एक नेक काम भी, लेकिन वह क्षण बीत गया तो संभव है हम उस अच्छे कार्य को करने के लिए जीवित ही न रहें अथवा हमारा विचार बदल जाए। बहुत सारी बातें हो सकती हैं लेकिन इतना निश्चित है कि यदि हम उस क्षण को चूक गए तो हम किसी नेक काम अथवा पुण्य से वंचित अवश्य रह जाएँगे। किसी छूटे हुए नेक काम को करने का अवसर दोबारा नहीं मिलता और हम सबने अपने जीवन में अवश्य ही कई बार ऐसा अनुभव किया होगा। किसी का धन्यवाद करना है तो क्या किसी मुहूर्त अथवा उचित अवसर की प्रतीक्षा करना उचित होगा? कदापि नहीं। किसी को पुरस्कृत करना है अथवा किसी का धन्यवाद करना है तो शीघ्रता करें।

साथ ही कहा गया है कि अशुभस्य कालहरणम् अर्थात् अशुभ अथवा पाप कर्म के लिए शीघ्रता न करें अपितु समय गुज़र जाने दें। अशुभ कार्य को करने में कभी भी शीघ्रता मत कीजिए। उन्हें यथासंभव टाल दीजिए। संभव है कालांतर में कहीं से ऐसी सद्बुद्धि मिल जाए कि पाप कर्म से विरत हो जाएँ, उससे बच जाएँ। आज इस विश्व में इतने आणविक, परमाणविक व अन्य अस्त्र-शस्त्र उपलब्ध हैं जिनसे इस खूबसूरत दुनिया को इसके संपूर्ण जीव जगत सहित अनेकानेक बार पूर्णतः नष्ट-ध्वस्त किया जा सकता है लेकिन कुछ अच्छे व समझदार लोगों की अशुभस्य कालहरणम् नीति व दृष्टि के कारण ही हम जीवित हैं।

अशुभ कार्य को यथासंभव टाल दीजिए। किसी को दंड देना है तो थोड़ा ठहर जाएँ। बार-बार विचार करें कि ऐसा करना उचित है या अनुचित। किसी से झगड़ा करना है तो टाल दीजिए। फिर देखा जाएगा। झगड़े के दुष्परिणाम भयंकर हो सकते हैं। किसी का कत्ल हो सकता है। यदि ऐसा होता है तो जेल जाना निश्चित है। ज़िन्दगी बर्बाद हो जाएगी। खानदान पर बट्टा लग जाएगा। क्या किसी भी शुभ कार्य को करने व अशुभ कार्य को न करने का मुहूर्त निकाला जाता है? नहीं। संभव ही नहीं है। समझदारी और विवेक से काम लेने की ज़रूरत है। समझदारी और विवेक से कोई भी समय शुभ समय हो जाएगा जबकि इसके अभाव में किसी भी घड़ी को अशुभ होते देर नहीं लगती।

कहते हैं समय बड़ा मूल्यवान है अतः उसका सदुपयोग करो। समय तो निरंतर प्रवहमान है। बीत जाता है। यह भी कहा गया है कि समय नहीं व्यतीत होता हम ही व्यतीत हो जाते हैं। समय नष्ट नहीं होता हम ही नष्ट हो जाते हैं। उपयोगी कार्यों द्वारा समय नहीं हम नष्ट होने से बच जाते हैं। अनुपयोगी कार्यों से हम नष्ट हो जाते हैं। हमारी उपलब्धियाँ नगण्य हो जाती हैं। सही मुहूर्त नहीं सही और उपयोगी कार्य का चुनाव कर उसे पूरा करना अपेक्षित है अन्य कुछ भी नहीं। फिल्मों में आपने ये डायलॉग अवश्य ही सुना होगा कि लड़की को शीघ्र बुलवाइए शुभ मुहूर्त निकला जा रहा है। ये डायलॉग भी प्रायः उस समय कहा जाता है जब कालनायक नायिका से जबरदस्ती विवाह करने के लिए तत्पर होता है। क्या ये स्थिति सचमुच तथाकथित शुभ मुहूर्त के औचित्य पर प्रश्न चिह्न नहीं लगाती?

कई बार हम किसी अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य में लगे होते हैं और किसी भी कीमत पर उसे पूरा किए बिना नहीं छोड़ना चाहते लेकिन इसी दौरान विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न होकर हमारे काम को बाधित कर देती हैं। मान लीजिए किसी शुभ मुहूर्त में आप कोई अनुष्ठान या आयोजन करवा रहे हैं और उसी उसी शुभ मुहूर्त में ही पूरा होना चाहिए। ऐसे समय पर यदि दुर्भाग्य से आपका बच्चा सीढ़ियों से गिर जाता है और उसे गंभीर चोट लग जाती है तो क्या इस स्थिति में आप शुभ मुहूर्त में हो रहे कार्य को पहले पूरा होने देंगे या बच्चे को डॉक्टर के पास या अस्पताल लेकर लाएँगे? यदि हम महत्त्वपूर्ण कार्य की बजाय आवश्यक कार्य पहले और फौरन नहीं करेंगे तो शुभ मुहूर्त के अशुभ में बदलते देर नहीं लगेगी।

जब हमारे पास अवसर होते हैं, योजनाएँ होती हैं तभी उनके क्रियान्वयन के लिए उचित समय या शुभ मुहूर्त तलाशते हैं न कि शुभ मुहूर्त में बैठकर अवसर की प्रतीक्षा करते हैं। शुभ मुहूर्त के कारण जीवन में कभी भी महत्त्वपूर्ण कार्य करने के अवसर नहीं मिलते। हमारा विवेक, हमारी सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता, हमारा सामान्य ज्ञान व हमारी व्यावहारिक बुद्धि आदि ऐसे तत्त्व हैं जो किसी भी क्षण को शुभ अर्थात् उपयोगी बनाने में सक्षम हैं। शुभ मुहूर्त की तलाश छोड़ कर शुभ, उपयोगी व सकारात्मक कार्यों के चयन व उपलब्ध उपयोगी अवसरों के क्रियान्वयन में हम जितनी शीघ्रता कर सकें उतना ही हमारे लिए श्रेयस्कर होगा।

ए-डी.१०६ सी-पीतमपुरा
दिल्ली-११००३४

hearyasamaj.org

आर्य समाज मुरादाबाद में आर्यवीर एवं आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य समाज मुरादाबाद द्वारा दिनांक २१ से २८ जून २०१५ तक आर्यवीर एवं आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न विद्वानों द्वारा आर्यवीरों व वीरांगनाओं के देश निर्माण के लिए उनके कर्तव्यों का बोध कराया और देशहित में अपने जीवन का सर्वांगीण योगदान का सन्देश दिया।

दिनांक २८ जून, २०१५ को प्रातःकाल समापन समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा पहुंचे। उन्होंने आर्यवीरों व वीरांगनाओं को सम्बोधित करते हुये कहा कि आज देश में सभी प्रकार की बुराइयां फैल रही हैं। भ्रूण हत्या, बलात्कार, फिर बलात्कारियों द्वारा पीड़िता की हत्या आम बात होती जा रही है। गुण्डागर्दी चरम पर बढ़ रही है। आप सभी वीरों व वीरांगनाओं को उनपर तीव्र दृष्टि रखकर उनको जड़से मिटाने का संकल्प लेना है। आपका दृढ़ संकल्प सभी बुराइयों को समाप्त करने में सहायक होगा। सभी अधिकारियों को उनके इस आयोजन पर साधुवाद देकर प्रधान जी ने भाषण को विराम दिया।

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ में पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने दीक्षान्त भाषण दिया

गढ़मुक्तेश्वर २८ जून-गंगा किनारे प्राचीन तीर्थ स्थली गुरूकुल महाविद्यालय पूठ-गढ़मुक्तेश्वर के निकट आज प्रातःकाल पिछले एक सप्ताह से चल रहा पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का समापन हुआ जिसमें २५ पुरोहितों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। श्री सत्यदेव जी-एटा को प्रथम कृष्णपाल सिंह जी-मुरादाबाद को द्वितीय एवं वेदपाल आर्य अमरोहा को तृतीय घोषित किया गया। स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती प्रान्तीय सभा मन्त्री जी गुरुकुलपूठ ने दीक्षान्त भाषण वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः से प्रारम्भ करते हुये प्रशिक्षुओं को उनके कर्तव्यों का ध्यान कराया। यज्ञ में संकल्प के साथ आहुतियाँ प्रदान कराई तथा सभी प्रशिक्षुओं को सम्बोधित करते हुए बताया कि समाज में फैली हुई कुरीतियां-भ्रान्तियां आपको ही दूर करनी है यदि आप जागरूक रहेंगे तो समाज में जागृति रहेगी, आपको आदर्श बनना है। आपके व्यवहार का अनुकरण समाज करेगा।

Thearyasamaj.org

राष्ट्रगीत व राष्ट्रगान

उदय खत्री

भारत के दो राष्ट्रीय गीतों में राष्ट्रगान के पद हेतु स्पर्धा थी। एक श्री बंकिम चन्द्र चटर्जी द्वारा रचित '' वन्दे मातरम्'' और दूसरा गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर का ''जन गण मन''। दोनों ही गीतों का पुरानी स्मृतियाँ जगाने वाला गौरवशाली इतिहास है। दोनों ही गीत भारत की महान विभूतियों की कृतियाँ है।

दोनों गीतों में ''वन्दे मातरम्'' अधिक पुराना है। दिसम्बर, १८६६ में बम्बई के प्रसिद्ध वकील मो० रहीमतुल्ला सयानी की अध्यक्षता में कलकत्ता में कांग्रेस का १२ वाँ अधिवेशन आयोजित हुआ। इस अवसर पर ''वन्दे मातरम्'' गीत पहली बार सम्पूर्ण रूप से गुरूदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर 'टैगोर' ने देश राग एक ताल में निबद्ध अपनी ओजस्वी वाणी में गया था। उस समय उनके भाई ज्योतिरिन्द्र नाथ ने आर्गन बजा कर उनका साथ दिया था। आगे चल कर यह गीत कांग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन में मंगल गान के रूप में गाया जाने लगा।

बाद में गुरूदेव रवीन्द्र नाथ ने 'जन गण मन' की रचना की। दिसम्बर, १६११ में पं० विशन नारायण धर की अध्यक्षता में कलकत्ता में आयोजित २६वें कांग्रेस अधिवेशन के दूसरे दिन एक राजनीतिक बैठक में सम्पूर्ण 'जन गण मन' गीत पहली बार गाया गया। सम्भवतः इसे भी गुरूदेव ने ही गाया था। पहले दिन परम्परानुसार 'वन्दे मातरम्' गाया गया था।

गुरूदेव रवीन्द्र नाथ जब ''तत्व बोधिनी'' पत्रिका के सम्पादक थे तो इसके जनवरी, १६१२ के अंक में 'जन गण मन' सम्पूर्ण रूप से ''भारत विधाता'' शीर्षक से पहली बार प्रकाशित हुआ।

आरम्भ में ही इस गीत के कुछ शब्दों मसलन- '' अधिनायक'', ''भारत-भाग्य विधाता'' ''राजेश्वर'' एवं ''चिर सारथी'' आदि किसको सम्बोधित हैं, को लेकर दुर्भाग्यपूर्ण व निरर्थक विवाद आरम्भ हो गया। यहीं तक कहा गया कि ये सारे विशेषण सम्राट जार्ज पंचम के लिए थे जो उस समय भारत यात्रा पर आए थे। शुरू-शुरू में तो गुरूदेव ऐसे दुष्प्रचार का उत्तर न देना उचित समझते हुए मौन रहे, परन्तु घनिष्ठ मित्रों के जोर देने पर उन्होंने ऐसे मनगढ़न्त एवं अपमानजनक अर्थ लगाने वालों को चेतावनी देते हुए कहा था, जो लोग मुझे इतना बड़ा मूर्ख समझते हैं कि मैं जार्ज चतुर्थ या पंचम की स्तुति करूँगा, यदि मैं उन लोगों को उत्तर देने की चिंता करूँ तो यह मेरा अपमान करना होगा।

गुरूदेव ने सन् १६१६ में '' दि मार्निंग सांग ऑफ इण्डिया'' शीर्षक से ''जन गण मन'' का अंग्रेजी अनुवाद भी किया। बाद में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द सरकार ने इस गीत का हिन्दी रूपान्तर। शुभ सुख चैन की बरखा बरसे .....। कर उसे अपना राष्ट्र गीत बनाया। नेताजी सुभाष ने कैप्टन राम सिंह को इस राष्ट्रगीत की धुन तैयार करने का दायित्व सौंपते हुए कहा था, 'इसकी धुन नींद लाने वाली नहीं, नींद से जगाने वाली होनी चाहिए। और कैप्टन राम सिंह ने ऐसा ही किया।

१५ अगस्त, १६४७ को देश आजाद हुआ। १६ अगस्त, १६४७ को दिल्ली के लाल किले पर यूनियन जैक उतार कर अपना राष्ट्रीय तिरंगा ध्वज फहराए जाते समय कैप्टन राम सिंह ने अपने बैण्ड के साथ वहाँ उपस्थित होकर यही धुन बजाई थी।

स्वाधीनता के बाद 'राष्ट्रगान' का प्रश्न उठा। 'वन्दे मातरम्' को राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार करने में कठिनाई मात्र इतनी थी कि उसका ''हार्मोनाइजेशन'' नहीं हो पाता था। विशेषज्ञों के कथनानुसार यह गीत कुछ आकारहीन और हार्मोनाइजेशन हेतु बहुत बिखरा हुआ था। परन्तु हममें से बेसुरा से बेसुरा व्यक्ति भी जन गण मन के समूह गान में सम्मिलित हो सकता है।

अन्ततः, २४ जनवरी, १६५० को संविधान सभा ने 'जन गण मन' को राष्ट्रगान के रूप में तथा कैप्टन राम सिंह द्वारा पूर्व में आजाद हिन्द सरकार के राष्ट्रगीत 'शुभ सुख चैन की बरखा बरसे....' के लिए तैयार की गई धुन को ही राष्ट्रगान 'जन गण मन' के लिए स्वीकार कर लिया। इस निर्णय की घोषणा करते हुए सभा के अध्यक्ष डा. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था, 'वन्दे मातरम्' गीत जिसकी भारत के स्वाधीनता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका रही है, उसे भी जन गण मन के साथ समान रूप से सम्मानित करते हुए राष्ट्रगीत का पद प्रदान किया जाता है। इस प्रकार राष्ट्रगीत और राष्ट्रगान ये दोनों ही पद समान होंगे।

तब से परम्परानुसार समारोहों का आरम्भ राष्ट्रगीत 'वन्दे मातरम्' तथा समापन राष्ट्रगान जन गण मन से होता चला आ रहा है।

राष्ट्रगान

''जन गण मन'' ।।सम्पूर्ण।।

: गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगौर

जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा, द्राविड़, उत्कल, बंग।
विन्ध्य, हिमाचल, जमुना गंगा, उच्छल जलधि तरंग।।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे।
गाहे तव जय गाथा।
जन गण मंगलदायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।
जय हे। जय हे। जय हे। जय जय जय जय हे ।।१।।

अहरह तब आहवान प्रचारित, सुनि तब उदार वाणी।
हिन्दु, बौद्ध, सिख, जैन, पारसी, मुसलमान, क्रिस्तानी।।
पूरब, पश्चिम आसे, तब सिंहासन पाशे।।
प्रेम हार होय गाथा।
जन गण एक्य विधायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।
जय हे। जय हे। जय हे। जय जय जय जय हे ।।२।।

पतन, अभ्युदय, बंधुर, युग-युग धावित यात्री।
हे चिर सारथी। तव रथ चक्रे मुखरित पथ दिन रात्री।।
दारूण विप्लव माझे। तव शंख ध्वनि बाजे।
संकट दुःख त्राता।
जन गण पथ परिचायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।।
जय हे। जय हे। जय हे। जय जय जय जय हे ।।३।।

घोर तिमिर घन निविड निशीथे, पीड़ित मूर्च्छित देशे।
जाग्रत छिल तब अविचल मंगल नत नयने अनिमेषे।
दुःस्वपने आ तके, रक्षा करिले अंके।।
स्नेहमयी तुमि माता।
जन गण दुःख-त्रायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।
जय हे। जय हे। जय हे। जय जय जय जय हे ।।४।।

रात्रि प्रभावित उदिल रविच्छवि पूर्व उदयगिरि भाले।
गाहे विहंगम, पुण्य समीरण नव जीवन रस ढाले।।
तव करूणारूण रागे निद्रित भारत जागे।।
तव चरणे नथ माथा।
जय जय जय हे। जय राजेश्वर, भारत भाग्य विधाता।
जय हे। जय हे। जय हे। जय जय जय जय हे ।।५।।

कौमी तराना

शुभ सुख चैन की बरखा बरसे, भारत भाग्य है जागा।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा, द्राविड़ उत्कल बंगा।।
चंचल सागर, विध्य, हिमालय, नीला जमुना गंगा।
तेरे नित गुन गायें, तुमसे जीवन पायें, सब तव पायें आशा।
सूरज बन कर जग पर चमके, भारत नाम सुभागा।।
जय हो, जय हो, जय हो, जय.. जय.. जय.. जय.. हो।
भारत भाग है जागा।
सुबह सवेरे पंख पखेरू, तेरे ही गुन गाये।
बास भरी भरपूर हवायें जीवन में रूत लायें।।
सब मिल कर हिन्द पुकारे, जय आजाद हिन्द के नारे।
प्यारा देश हमारा।
सूरज बन कर जग पर चमके भारत नाम सुभागा।
जय हो, जय हो, जय हो, जय.. जय.. जय.. जय हो।
भारत भाग है जागा।
सबके दिल में प्रीत बसायें, तेरी मीठी बानी।
हर सूबे के रहने वाले, हर मजहब के प्राणी।।
सब भेदो का फर्क मिटा के, सब गोद में तेरी आके।
गूंथे प्रेम की माला।
सूरज बनकर जग पर बनकें, भारत नाम सुभागा।
जय हो, जय हो, जय हो, जय.. जय.. जय.. जय हो।
भारत भाग है जागा।

प्रेरणास्पद जीवन -

अपने पेरिस से प्यार करता हूँ

डॉ. अन्सारी भारत से फ्रांस गये थे। एक दिन वे पेरिस की चौड़ी सड़क पर टहलते हुए जा रहे थे। उन्होंने जेब में हाथ डाला तो हाथ में एक कागज आ गया। देखा तो कागज काम का नहीं था। डॉ. अन्सारी ने कागज मोड़कर एक पुड़िया बनायी और उसे वहीं सड़क पर फैंक कर आगे बढ़ गये।

तभी पीछे से एक लम्बी-चौड़ी कार आकर रुकी। उसमें से एक व्यक्ति निकला, उसने पुड़िया उठाकर सड़क किनारे रखे कूड़े के ढेर में डाल दी। उस व्यक्ति ने डॉ. अन्सारी के कंधे पर हाथ रखकर कहा - मैं अपने पेरिस से प्यार करता हूँ उसे स्वच्छ रखना चाहता हूँ।

एकाग्र साधना से उपलब्धि बालक आइस्टीन की

जर्मनी के एक विद्यालय में एक बालक पढ़ता था। अध्यापक उसे समझाकर हार जाते थे, लेकिन गणित के सरल प्रश्न भी उसकी समझ में नहीं आते थे। कभी-कभी पिटाई भी हो जाती थी। सभी उसे बुद्धू कहते थे।

एक बार गणित का एक प्रश्न बार-बार समझाने पर भी उसे नहीं आया तो अध्यापक ने पिटाई की और कहा - भगवान ने इसे मस्तिष्क ही नहीं दिया। इस घटना से उसे बहुत ठेस लगी। उसने विद्यालय छोड़ दिया। वह मन को एकाग्र करके स्वयं ही पढ़ने लगा कुछ समय में उसने बहुत सी पुस्तकें पढ़ डालीं। इसके पश्चात इसी बुद्धू कहे जाने वाले बालक ने गणित के नये-नये सिद्धांत खोज निकाले। वही बालक आइस्टीन नाम से प्रसिद्ध हुआ। उनके समय में संसार में उन जैसा गणिता दूसरा नहीं हुआ।

संकलनकर्ता-**डॉ. धीरज सिंह,**
सभा कोषाध्यक्ष

Thearyasamaj.org

विश्व योग दिवस पर-योग चर्चा

जहां तक शरीर के स्वास्थ की दृष्टि से शरीर की किसी रचना विशेष को प्रभावित कर शरीर की क्रियाओं में परिवर्तन लाने का प्रश्न हैं तो इस प्रकार के अभ्यास केवल शरीर रचना व क्रिया के ज्ञाता के परामर्श से हमारी आवश्यकता के अनुरूप ही किया जाना उचित प्रतीत होता है। हम कोई भी औषधि किसी भी रूप में तभी ग्रहण करते हैं जब उसकी हमारे शरीर की क्रिया को प्रभावित करती है। इस हेतु हम सदैव शरीर की रचना क्रिया व विकृति के सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान के विशेषज्ञ चिकित्सक से ही परामर्श लेकर औषधियों को टैबलेट, सीरप, कैपसूल, चूर्ण, जड़ी, बूटी, रस, भस्म, आसव, अरिष्ट आदि के रूप में प्रयोग करते हैं। बिना चिकित्सक के परामर्श से ली गयी औषधियों का ही परिणाम है कि आज हमारे शरीर के विभिन्न महत्वपूर्ण अंगों की क्रियाशीलता प्रभावित होकर अनेक जानलेवा गंभीर बीमारियां पैदा हो रही है।

शरीर रचना- क्रिया व विकृति का सम्यक ज्ञान रखने वाला चिकित्सक भी व्यक्ति की शारीरिक मानसिक स्थिति आयु व रोग विशेष का निदान कर ही यथोचित मात्रा में औषधि लेने का परामर्श देता है।

आज के तथा- कथित योगाचार्य, शरीर की रचना, क्रिया व विकृति आदि को बिना जाने आयु बल आदि पर ध्यान दिये बिना ही सामूहिक रूप में, स्पर्धा के रूप में शरीर को योग के नाम पर तरह तरह से तोड मरोड़ कर उनकी रचना व क्रिया आदि को प्रभावित करते हैं। जिससे लाभ की अपेक्षा हानि होने की संभावना अधिक रहती है। जैसे सभी को एक जैसी औषधि नहीं दी जा सकती उसी प्रकार सभी को एक जैसी शारीरिक क्रियायें कराया जाना न तो तर्क संगत है और न ही लाभदायक। क्रियाओं को सामूहिक रूप से कराने पर किसी के द्वारा अच्छा अभ्यास हो जाने पर अन्यों में उसके लिये अनावश्यक प्रयास किया जाना न हो पाने पर उनका कुण्ठित होना उन्हें किसी लाभ की अपेक्षा हानि अधिक पहुँचा सकता है। ऐसे अनेक रोगी मेरे पास आकर अपनी कथा व्यक्त कर चुके है।

केवल बाल्यावस्था से ही शरीर को स्वस्थ रखने के लिए वे सभी व्यायाम लाभप्रद होते हैं जिनसे हमारा शरीर आगे पीछे दांये बांये व चारों तरफ क्रमशः गति करता हुआ शरीर की वाह्य रचना व आन्तरिक अंगों की यथोचित मात्रा में प्रभावित कर उनमें रक्त संचरण द्वारा स्वस्थ व क्रियाशील बनाये रखने में सहायक होते हैं।

इसी प्रकार शरीर के किसी अंग या संस्थान विशेष के शोधन की आवश्यकता है तो आयुर्वेद के पंचकर्म अथवा हठ योग के षटकर्म द्वारा उनका शोधन भी किसी कुशल चिकित्सक की देख रेख में ही किया जाना उचित व तर्क संगत है। न कि केवल पुस्तकों में पढ़कर अथवा तथाकथित योगाचार्यो द्वारा अपनी ऐषणाओं की पूर्ति हेतु किया जाना। यह दावा तो तथाकथित योग द्वारा सभी रोगों को ठीक करने का दावा करते हैं परंतु धीरे धीरे आयुर्वेदिक औषधियों के क्रय विक्रय का मार्ग प्रारम्भ कर देते हैं जबकि इनके द्वारा किसी भी मान्यता प्राप्त संस्था द्वारा आयुर्वेद का कोई ज्ञान व उपाधि प्राप्त की गयी होती है और न ही इस विधा से चिकित्सा करने हेतु उनके पास कोई शासकीय मान्यता प्राप्त पंजीकरण होता है। इसकी पूर्ति हेतु यह अपने धन बल पर उन बेरोजगार आयुर्वेद स्नातकों को अपने साथ संबद्ध कर लेते हैं जो शासन द्वारा विधि सम्मत संस्थाओं से आयुर्वेद में उपाधि प्राप्त व चिकित्सा कार्य करने हेतु पंजीकरण युक्त होते हैं। इस प्रकार इनका व्यवसाय बेचारे बेरोजगार चिकित्सा स्नातकों के बलबूते पर खूब फलता फूलता चला जाता है। इस प्रकार ये तथाकथित योगाचार्य योग के नाम पर अपनी वितिष्णा व लोकैष्णा की पूर्ति करते यत्र तत्र देखे जा सकते हैं।

अंत में मेरा आपसे निवेदन है कि योग के नाम पर फैलाये जा रहे वेद विरूद्ध ज्ञान व अभ्यास से अपने स्वाध्याय, चिंतन मनन द्वारा विरत होकर यथार्थ योग के अभ्यास में प्रवत्त होकर स्वयं को व समाज की समस्त प्रकार की वेदनाओं के नाश में अपना योगदान प्रदान करें। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होवें। महर्षि दयानन्द जी के दस विषयों में वेद सम्मत योग का सैद्धान्तिक व व्यावहारिक अभ्यास का शुभारम्भ निहित है।

सही गलत का निर्णय वेद के आधार पर ही हम करेंगे

-डॉ. भानु प्रकाश आर्य
पूर्व अधीक्षक योग एवं पंचकर्म
राज.आयुर्वेद महाविद्यालय (लखनऊ विश्व विद्यालय)
लखनऊ

गुरूकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर में प्रवेश प्रारम्भ

गुरूकुल महाविद्यालय गंगा के पावन तट पर ऋषि महर्षियों की तपस्थली, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित है। यहां संस्कृत भाषा के साथ-२ आधुनिक विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा का उत्तम ज्ञान भी कराया जाता है। छात्रों को उत्तम संस्कार प्रदान करने हेतु प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या हवन एवं यौतगिक क्रियायें करायी जाती हैं। सुसज्जित छात्रावास उपलब्ध है। छात्रों को सादा एवं पौष्टिक भोजन खिलाया जाता है। यहां पर मध्यमा स्तर (इन्टरमीडिएट) की परीक्षाएं उ.प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा संचालित है। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का ५वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है यहां के स्नातक शिक्षक, पुरोहित तथा सैन्य, पुलिस पी.ए.सी. वन विभाग, लोक सेवा आयोग आदि विभागों में कार्यरत हैं यहां पर छात्र के सर्वागीण विकास के लिए विशेष बल दिया जाता है।

कृपया अपने होनहार बच्चों को संस्कार युक्त शिक्षा दिलाने हेतु दुरभाष पर वर्ता करके प्रवेश दिलायें। प्रवेश नियम डाक से अथवा व्यक्तिगत रूप से प्राप्त कर सकते हैं। विद्यालय में २ रसोइया, एक वार्डन (संरक्षक) एक क्लर्क की आवश्यकता है शीघ्र सम्पर्क करें। अधिक जानकारी फोन से प्राप्त की जा सकती है।

-आचार्य इन्द्रपाल, मुख्य अधिष्ठाता
मो. ६४११६२६५२८

पृष्ठ.२ का शेष भाग...

काम, क्रोध, मोह और अहंकार (अभिमान) - ये पांचों मनुष्य के आन्तरिक शत्रु कहे गए हैं। अहंकार व्यक्ति के उत्तम कार्यो को भी महत्वहीन कर देता है। इतिहास पर दृष्टि डालें तो रावण, जरासंघ, कंस और दुर्योधन आदि का विनाश अहंकार के कारण ही हुआ था। हिटलर का पराभव भी उसके अहंकार के परिणाम स्वरूप ही हुआ। अंहकार - ग्रस्त मनुष्य को अपनी कमियां और अवगुण दिखलाई नहीं देते। अतः अपने क्षेत्र में और आगे बढ़ाने, उन्नति करने का मार्ग अवरूद्ध हो जाता है। अभिमान किसी भी बात का हो सकता है - धन का अभिमान, पद का अभिमान, शक्ति का अभिमान, विद्या का अभिमान और त्याग का अभिमान भी। अभिमानकर्त्ता यह नहीं समझता है कि संसार का रचयिता प्रत्येक क्षेत्र में महानतम है और उसकी रचना विलक्षण तथा अगम्य है। संसार में एक से बढ़कर एक ज्ञानी, दानी, धनी और बली व्यक्ति विद्यमान है। परिस्थितियों के बदलते ही पैर तले की धूल सर पर पहुंच जाती है और ऊँचे पर्वतशिखर धराशायी हो जाते हैं। अतः अभिमान त्याज्य है, क्योंकि वह उन्नति में बाधक है।

विनम्रता अहंकार को नष्ट करने वाला गुण है। इसको अपनाकर व्यक्ति सर्वाप्रिय बन सकता है। किन्तु विनम्रता गुणी, शक्ति-सम्पन्न व्यक्ति को ही शोभा देती है। निर्बल व्यक्ति या राष्ट्र सबल व्यक्ति या राष्ट्र से पिटकर, अपमानित होकर उसे क्षमा कर दे तो इसे विनम्रता नहीं कहते। कवि की यह पंक्ति बिल्कुल सटीक है - ''क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।'' वास्तव में विनम्र वह ही कहलाता है, जो गुण-शक्ति-सम्पन्न होने पर भी उसका दुरूपयोग न करे, दूसरों के सम्मुख उसका बढ़ाचढ़ाकर प्रदर्शन न करे।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अभिमान और विनम्रता एक दूसरे के विरोधी गुण हैं। किन्तु स्वाभिमान इससे भिन्न है। स्वाभिमानी व्यक्ति स्वयं से अधिक अपने देश को, महापुरुषों को अपनी संस्कृति और सभ्यता को महत्त्व देता है। वह निराशावादी और हीनभावना ग्रस्त होता। वह पुरुषार्थी होता है अतः गौरवमय अतीत को ध्यान में रखकर उन्नत मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। एक वाक्य में कहें तो - अभिमान पतन का और स्वाभिमान उत्थान का कारण होता हैं। स्वाभिमानी व्यक्ति विनम्र होते हुए भी दृढ़ निश्चयी होता है। स्वाभिमान - शून्य व्यक्ति तो सदैव अपमानित ही होता रहता है। किसी कवि ने लिखा है - ''जिसको न निज गौरव तथा निज देश पर अभिमान है। वह नर नहीं नर-पशु निरा है और मृतक समान है।
वस्तुतः देश, संस्कृति, पूर्वजों आदि पर गर्व करने वाला स्वाभिमानी व्यक्ति अपने को इन सबके कारण ही गौरवान्वित अनुभव करता है। अतः विनम्र होता है। ●●●

पृष्ठ.१ का शेष भाग...

सुखाड़िया - कुम्भाराम आर्य - डा० कर्ण सिंह - आचार्य नरेन्द्र देव सुभाष - राजा महेन्द्र प्रताप - डा० सम्पूर्णानन्द - बासुदेव शरण अग्रवाल- महावीर त्यागी - सदाशिव गोलवरकर श्यामा प्रसाद मुखर्जी - भाई परमानन्द - राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद - लाल बहादुर शास्त्री - सरदार पटेल - चौ० चरण सिंह - चन्द्रभानु गुप्त - महात्मा नारायण स्वामी दीन दयाल उपाध्यक्ष - झांसी की रानी - प्रो० शेरसिंह - स्वामी श्रद्धानन्द - स्वामी स्वतंत्रानन्द शिक्षा ऋषि १२७ वर्षीय स्वामी कल्याणदेव जी शुक्रताल महात्मा हंसराज - सावरकर - स्वामी रामेश्वरानन्द - महात्मा आत्मानन्द सरस्वती स्वामी सर्वानन्द सरस्वती - स्वामी ओ३मानन्द - स्वामी गंगादास - स्वामी दर्शनानन्द पं० बुद्धदेव विद्यालंकार मैथिली शरणगुप्त- दिनकर - डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी रामचन्द्र शुक्ल आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी आदि हिन्दी प्रेमियों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज के हिन्दी प्रेम को शिरोधार्य रखकर - हिन्दी भाषा को ही सदन में, प्रस्ताव पारित होने के बाद भी केवल पं० नेहरू के अंग्रेजी भाषा मोह के आगे आजतक भी भारतीय आत्मा हिन्दी राष्ट्र-भाषा के लिये विश्व बाजार में रूपवती मिखकरिन की तरह अकेली खड़ी है।

''कश्मीर का एकीकरण - ३७० धारा - हिन्दी राष्ट्रभाषा- तिब्बत है लामाओं का - राम की जन्मभूमि पर राम मन्दिर निर्माण - आदि समस्याओं के समाधान के लिये कब तक आदरणीय पं० नेहरू की प्रतीक्षा में दरदीले आंसू बहाता रहेगा भारत ? ''

-मालदाबाग पुरानी गुड़मण्डी
शाहपुर, मुजफ्फर नगर (उ.प्र.)२५१२१८
मो. ०६६२७५७५७७७

Thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....
....

राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट नागपुर के द्वारा आर्य जगत् के सर्वोच्च पुरस्कारों के लिये जीवन दायिनी + विद्वानों एवं भजनोपदेकों से आवेदन पत्र आमंत्रित।

(१) आर्य रत्न पुरस्कार सृ. सं. १९६०८५३११३.१४.१५.१६ के लिये पुरस्कार संख्या ४ प्रत्येक पुरस्कार एक लाख रूपया १००,००,०० चार विद्वान् जीवन दानियों से आवेदन पत्र आमंत्रित है, जिनका पूरा जीवन परोपकार, त्याग, तपस्या, समाज सेवा, योग, शिक्षा, गौसंवर्धन एवं आर्ष प्राच्याविद्या, के प्रसार व प्रचार में नैष्ठिक जीवन के साथ निस्वार्थ भाव से उल्लेखनीय योगदान रहा है।

(२) आर्य विभुषण पुरस्कार सृ.सं. १९६०८५३११४.१५.१६ के लिये पुरस्कार संख्या ३ प्रत्येक पुरस्कार ५१०००,०० रूपया इक्यावन हजार रूपयों का, उन विद्वानों को दिया जायेगा, जिनका पूरा जीवन वेद-प्रचार, प्रसार, लेखन, वैदिक साहित्य लेखन, व समाज सेवा में लगा हो।

(३) आर्य गौरव पुरस्कार सृ. सं. १९६०८५३११४.१५.१६ के लिये पुरस्कार संख्या ३ प्रत्येक पुरस्कार २१०००.०० इक्कीस हजार रूपयों का, यह पुरस्कार उन भजनोपदेशकों प्रचारकों को दिया जायेगा जिनका पूरा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में लगा रहा है।

(४) आवेदन पत्र स्वयं या विद्वान् के निकटतम जीवन से परिचित व्यक्ति द्वारा भी दिया जा सकता है प्रत्येक आवेदन पत्र के साथ विद्वान् के निकटतम जीवन से परिचित व्यक्ति का अनुमोदन भी साथ आना आवश्यक है।

सभी प्रस्ताव अनुभेदन के साथ ट्रस्ट के नीचे लिखे पते पर चयन-समिति के पास ३० सितम्बर तक पहुँच जाने चाहियें। बाद में आये प्रस्तावों पर विचार नहीं होगा। पुरस्कारों के लिये आये आवेदन पत्रों पर चयन-समिति का निर्णय ही अन्तिम मान्य होगा।

पता - पुरस्कार चयन - समिति
राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट ३८७, आर्योदय रुईकर मार्ग महल नागपुर-४४००३२ (महाराष्ट्र)

आर्यन अभिनंदन समारोह

सभी आर्य सन्यासी विद्वान, महोपदेशक, उपदेशक, भजनोपदेशक, ढोलक वादक जिनकी आयु ६० वर्ष या उससे अधिक है हम उन सबका अभिनंदन करेंगे। योग्य पात्र सादर आमंत्रित है। कृपया अपना परिचय निम्न पते पर भेजें-

नोट- केवल वे ही सज्जन लिखें जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के लिये लगाया है। कहीं अध्यापक या अन्य कोई नौकरी या कार्य नहीं किया हो।

समारोह का विवरण
अध्यक्षता- स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
स्थान- गुरूकुल गौतम नगर, नई दिल्ली
समय- प्रातः ६ बजे से १ बजे तक
दिनांक- १६ सितम्बर दिन शनिवार २०१५

ठाकुर विक्रम सिंह
पता- ए-४१ द्वितीय तल, लाजपत नगर पार्ट-द्वितीय, निकट लाजपत नगर मेट्रो स्टेशन
नई दिल्ली-११००२४
फोन- ०११-४५७६११५२, ०११-२६८४५२७

प्रवेश सूचना

१. ज्ञान गंगा गुरूकुल महाविद्यालय तारापुर पत्रालय- गौंडा जनपद अलीगढ़ उ.प्र. पिन-२०२१२३ में स्थित है। सुलभ वाहन व्यवस्था। अलीगढ़ से टेम्पों द्वारा गौंडा पहुँचे वहां से तारापुर ग्राम में गंगा नहर के तट पर गुरूकुल पधारें।
२. कक्षा ५ उत्तीर्ण १० वर्षीय पूर्ण स्वस्थ छात्र का प्रवेश।
३. वेदादि शास्त्रों का तथा अंग्रेजी, गणित, विज्ञान आदि सभी विषयों का ज्ञान।
४. गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा, शत प्रतिशत शानदार परिणाम।
५. सुयोग्य अनुभवी उच्च शिक्षा प्राप्त आचार्यगण एवं बाल केन्द्रित पर्यावरण
६. कम्प्यूटर, इंटरनेट, शैक्षणिक प्रवास, पर्यटन, शारीरिक प्रशिक्षण योग व सांस्कृतिक गतिविधियों आदि से सर्वांगीण विकास।
७. स्वास्थ्यप्रद जलवायु, रूचिकर भोजन, प्रकाश की पूर्ण व्यवस्था, निजी गौशाला, फलदार वृक्ष एवं महकदार सुरम्य वातावरण।
८. इनडोर गेम्स व आउटडोर गेम्स की विविध स्तरीय प्रतियोगिताएं, सुसज्जित प्रयोगशाला व समृद्ध पुस्तकालय के प्रयोग से बहुमुखी प्रतिभा
९. प्राथमिक चिकित्सा हेतु उचित व्यवस्था, फैमिली डाक्टर का प्रबंध।
१०. गरीब एंव जरूरतमंद छात्रों को पुस्तक आदि के लिए आर्थिक सहायता।

प्रवेश हेतु शीघ्र सम्पर्क करें-
प्राचार्य बच्चू सिंह आर्य
मो. ०६०८४१८०१००

संस्थापक/मुख्य अधिष्ठाता
स्वामी प्रशान्तानन्द सरस्वती
व्याकरणाचार्य
मो.- ०६५३६१००६६७

देश की शान बढ़ाओ

पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार वेद प्रचारक
आर्य सदन वहीन, जनपद पलवल हरियाणा
चल भाष क्रमांक - ०६८१३८४५७७४

प्यारा आर्य वर्त्त था, दुनियां का सरताज।
आर्यो का था विश्व में, चक्रवर्ती राज।।
चक्रवर्ती राज, जगत करता था आदर।
चरित्रवान, गुणवान,यहां के सब नारी-नर।।
गौ ब्राह्मण की आर्य, सभी करते थे सेवा।
करते थे सब प्राप्त, सुयश की पावन मेवा।।

नरेन्द्र मोदी जी! सुनो, नेता चतुर सुजान।
भारत के हो इस समय, तुम मंत्री प्रधान।।
तुम मंत्री प्रधान, जगत के नामी नेता।
वैदिक पथ पर चलो, बनो तुम वीर विजेता।।
श्री राम से बनो, बहादुर वीर निराले।
श्री कृष्ण से बनो, राज नेता मतवाले।।

वचन दिए थे आपने, याद करो श्रीमान।
गौ रक्षा की कीजिए, खुल करके ऐलान।।
खुल करके ऐलान सख्त कानून बनाओ।
बनो शिव, प्रताप वीर वन्दा बन जाओ।।
संविधान से तीन सौ सत्तर दफा हटाओ।
सबके लिए समान, यहां कानून बनाओ।।

अयोध्या में श्री राम के मन्दिर का निर्माण।
शुरू कराओ शीघ्र तुम, यदि चाहो कल्याण।।
यदि चाहो कल्याण बनो नेता तपधारी।
मानवता लो धार, प्रभु के बनो पुजारी।।
जो करता शुभ कर्म, जगत में शुभ फल पाता।
धर्मी का यशगान, विश्व में गाया जाता।

वचनों का पालन करो, करो धर्म के काम।
भला इसी में आपका, करो सार्थक नाम।।
करो सार्थक नाम, देश की शान बढ़ाओ।
बनकर वीर सुभाष, अमर जग में हो जाओ।।
जगत गुरू ऋषि दयानन्द की, शिक्षा मानो।
बन सरदार पटेल, राष्ट्रहित को पहचानो।।

आर्य समाज खलासी लाइन सहारनपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज खलासी लाइन सहारनपुर के प्रांगण में वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में विशेष यज्ञ हुआ। यज्ञ में मुख्य यजमान श्री अक्षय कुमार यादव, दिनेश कुमार, डा. राजवीर सिंह वर्मा, अनिल मारवाह सपत्नीक रहे। तत्पश्चात वैदिक विद्वान अंगद सिंह प्रधानाचार्य जी ने भजनों के माध्यम से वातावरण को भक्तिमय कर दिया। वैदिक विद्वान श्री हरिशंकर अग्निहोत्री जी आगरा ने कहा कि जहां वेद का विद्वान जायेगा और वेद शास्त्रों का उपदेश करेगा वहां स्वर्ग होगा और सब अपने अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री बलराज तोमर ने की। मंच संचालन डा. पूर्णचन्द्र शास्त्री जी ने किया। तत्पश्चात शांतिपाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

स्वामी—आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक—आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक—श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है—सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।